Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता : सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

डॉ0 विद्या प्रकाश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, ट्राइडेन्ट बी0एड्0 कॉलेज, गीधा, आरा, भोजपुर (बिहार)

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 82-86

Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

सारांश – पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न पर्यावरण संकट आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी मनुष्य की विकासीय प्रक्रियाओं का परिणाम है। वास्तव में यदि एक तरफ सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय विकास हुये हैं तो दूसरी तरफ विकट पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय समस्याएँ भी उत्पन्न हुई है। पर्यावरण और उसकी समस्याओं पर सार्थक विचार सांस्कृतिक कारकों के परिप्रेक्ष्य में ही संभव है। विशेषरूप से उच्च जनसंख्या वृद्धि, सीमित संसाधन, गरीबी, समाज की ग्रामीण एवं कृषि प्रधान पृष्ठभूमि सामाजिक परिवर्तन के लिए विकास योजना व विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराएँ हमारे लिए विचारणीय है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति समय–समय पर किए गए प्रयासों के फलस्वरूप पिछले वर्षों में भारत में कई पर्यावरणीय आन्दोलनों का जन्म हुआ। मीडिया ने इन आन्दोलनों को व्यापक स्थान दिया है और इनके उद्देश्यों से जनता को अवगत कराया है। ये आन्दोलन है– चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओ आन्दोलन, टिहरी बांध विरोधी आन्दोलन, मूक घाटी, एप्पिको आन्दोलन, भोपाल गैस त्रासदी, विष्णु प्रयाग बांध, चिलिका आन्दोलन एवं पानी बचाओ आन्दोलन और दिल्ली का वायु प्रदूषण नियंत्रण आदि। किन्तु पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। अतः इसके लिए हमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना आवश्यक इसलिए हो जाता है कि माध्यमिक स्तर से ही बच्चे अपने दायित्वों एवं कर्त्तव्यों को समझने लगते हैं साथ अपने लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं।

मुख्य शब्द– पर्यावरण, जागरूकता, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी।

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु, मानव सबका सम्मिलित रूप ही पर्यावरण है। प्रकृति में इन सबकी मात्रा व रचना इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलित जीवन बना रहे। यदि मानव इतिहास का अवलोकन करें तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य प्रकृति के इतने समीप था कि वह प्रकृति में ही अपने आपको पाता था। जल, वायु की प्राप्ति में कोई शंका नहीं थी, लेकिन विगत् कुछ समय से जब से मनुष्य ने प्रकृति से छेड़छाड़ आरम्भ की है प्रकृति का सामान्य स्वरूप असंतुलित व खण्डित होने लगा है और परिणामस्वरूप धीरे–धीरे जल, वायु, भूमि जीवन के आवश्यक तत्व प्रदूषित होकर चिन्ता के विषय बन गये हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वर्तमान पर्यावरण से अनुमान लगाया जा रहा कि आगामी कुछ वर्षों में मानव जीवन विनाश के गर्त में गिर जायेगा। इस विनाशकारी भयावहता से बचने के लिए आज पूरी दुनियाँ जागरूक होती नजर आ रही है, अर्थात् आज महसूस किया जा रहा है कि पर्यावरण का विनाशकारी रूप सबको तबाह कर देगा। आज पर्यावरण के अस्तित्व को बचाने की आवश्यकता है। इसके लिए वृक्ष और वनस्पतियों के अस्तित्व को बचाना, प्राकृतिक संसाधनों का उचित बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग, प्रदूषण से बचाव के उपाय, पर्यावरण सम्बन्धी सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मनोवृत्तियों का विकास करना, पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए बौद्धिक क्षमता एवं कौशल का विकास करना, पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी देना, प्राणी को सुखद जीवन उपलब्ध कराना, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना आदि आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्व स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएँ प्रयास कर रही हैं। विश्व स्तर की सन्धियों तथा अधिनियमों को पारित करते हुए भी आज भी पर्यावरण प्रदूषण तथा उसके संरक्षण की विश्वव्यापी समस्या बनी हुई है। इसके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाधान हेतु 'मानवीय पर्यावरण' पर 5 जून 1972 में 'स्टॉकहोम' में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। इसके अलावा पर्यावरण के क्षेत्र में 11 मार्च 1989 को हेग उद्घोषणा व 14 जून 1992 में ब्राजील में हुआ 'पृथ्वी सम्मेलन' भी इसी दिशा में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास थे।

भारतीय संविधान के 42वें अनुच्छेद (1976) में संशोधन करके एक नये अध्याय 'पर्यावरण संरक्षण' को नागरिकों के मूल कर्त्तव्य के रूप में जोड़ा गया। सन् 1980 में भारत सरकार ने स्वतंत्र रूप में एक पर्यावरण विभाग की स्थापना की और इसी वर्ष में 'वन संरक्षण अधिनियम' बनाया। सन् 1981 में 'वायु–प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम' लागू किया गया। सन् 1986 में 'पर्यावरण संरक्षण अधिनियम' लागू किया गया। 'मोटर वाहन अधिनियम' 1 मई, 1990 से संशोधित अधिनियम के रूप में लागू किया गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्व स्तर पर सम्मेलन तथा संगठनों की व्यवस्था की गई है। सम्मेलनों की संस्तुतियों को लागू करने के लिए अधिनियम, अध्यादेश, कानून तथा संविधान में भी संशोधन किए गए हैं फिर भी इस दिशा में अच्छे परिणाम नहीं प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए मानव पर्यावरण पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 'पर्यावरण–शिक्षा' को विशेष महत्त्व दिया है क्योंकि पर्यावरण–शिक्षा द्वारा बालकों तथा युवकों में 'पर्यावरण संचेतना' का विकास किया जा सकता है।

''पर्यावरण सुधार के लिए, पर्यावरण के सम्बन्ध में, पर्यावरण के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा–पर्यावरणीय शिक्षा है।'' भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा विभाग, अहमदाबाद में स्थापित किया गया है, जिसमें पर्यावरण सम्बन्धी पाठ्य–सामग्री तथा शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण शिक्षा परिषद् ने 'यूनेस्को–प्रकल्प' के अन्तर्गत विज्ञान के विषयों में पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी शिक्षण हेतु 'किट' तैयार किए। यूनीसेफ योजना के माध्यम से सभी राज्यों ने इस कार्यक्रम को अपनाया है। यूनीसेफ योजना छात्रों को पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी सम्बन्धी जानकारी तथा संचेतना का विकास तथा संचार करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने (1978–79) में कार्यरत शिक्षकों को पर्यावरण सम्बन्धी प्रशिक्षण प्रदान किया, जो यूनेस्कों के कार्यक्रम के अन्तर्गत ही था। 'एनवायरनमेंट एजूकेशन पाइलट प्रोजेक्ट इन इंडिया' के माध्यम से पर्यावरण पर आधारित मॉड्यूल्स की तैयारी की गई।

आज विकासशील देशों में स्वच्छता व स्वास्थ्य की समस्या अति ज्वलंत है। ये समस्यायें हमारे पर्यावरण पर अपना सीधा प्रभाव डाल रही है। जिसके कारण संक्रमित रोगों की संख्या बढ़ी है। इस स्थिति से निपटने हेतु गैर सरकार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सरकारी योजनायें व नीतियाँ अपना प्रभावी कार्य करने का प्रयास कर रहा है। इसी के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन, वॉटर एड, युनीसेफ जैसी संस्थायें भारत में स्वच्छता के स्तर को प्रबल बनाने में अपना सहयोग दे रही है, ताकि हमारी स्थिति पहले से बेहतर हो सकें और एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण संभव हो सकें।

माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा का बोध सभी अभ्यर्थियों को अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में दिया जा रहा है जिससे सभी में 'पर्यावरण संचेतना' का विकास हो। भूगोल, विज्ञान, आदि शिक्षण विषयों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण के विशिष्ट प्रकरणों को सम्मिलित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का सम्बन्ध व्यक्ति में पर्यावरण के बारें में ज्ञान, अवबोध, कौशल, अभिवृत्ति, मूल्य निर्माण तथा चेतना विकसित करने से है।

अध्ययनकर्त्ता द्वारा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित पूर्व शोध अध्ययन किये गये जिसमें **मुछाल, महेश कुमार (2007)**[प] ने निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि– 87.5 प्रतिशत विद्यार्थियों में पेड़–पौधों के प्रति उच्च जागरूकता पायी गई, वे पेड़–पौधों को लगाने एवं व्यर्थ नहीं तोड़ने तथा पेड़–पौधों के महत्त्व के बारें में जानकारी सम्बन्धी कथनों पर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, जल एवं ऊर्जा संरक्षण, विद्यालय एवं स्वच्छता, खाद्य–सामग्री तथा आस–पास के वातावरण के प्रति जागरूकता पायी गयी। **सिंह, सुभाष (2008)**[पप] ने अध्ययन में इंगित किया कि– शहरी छात्रों को स्वच्छन्दता ग्रामीण छात्रों से ज्यादा होती है और शहरी छात्र/छात्राएँ विभिन्न संचार माध्यमों, विभिन्न प्रकार के लोगों के सम्पर्क में रहने के कारण अपने पर्यावरण के विषय में अधिक जानकारी रखते हैं। **विश्वकर्मा, उमाशंकर (2009)**[पपप], ने अध्ययन में इंगित किया कि– विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं में विशेष रूप से अलग से एक घण्टे पर्यावरण जागरूकता की शिक्षा प्रदान की जाती है। छात्रों में पर्यावरणीय जारूगता प्रदान करने के लिए विद्यालय की तरफ से वर्ष में एक पर्यावरण का प्रश्न पत्र हल कराया जाता है। पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए बच्चों को नीतियों कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। **दिवाकर, श्वेता (2012)**[पअ], ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है। **रंजना (2013)**[अ], ने निष्कर्ष में पाया कि– उच्च स्तर के छात्राओं में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि उच्च स्तर के छात्रों में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि की अपेक्षा अधिक है। **गायत्री, रेड्डी एवं रेड्डी (2014)**[अप] ने अध्ययन के पश्चात् पाया कि माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के पर्यावरण बोध पर उनके जाति एवं अभिभावक के व्यवसाय का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

जैन, रितेश (2015)[अपप]. ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **जॉनसन एवं खत्री (2015)**[अपपप]. ने अध्ययन में पाया कि– 40% छात्राओं में वृक्षों एवं वातावरण सम्बन्धी जानकारी का स्तर उच्च पाया गया। 50% छात्राओं में जानकारी का स्तर बिल्कुल निम्न पाया गया। **श्रीवास्तव (2015)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया गया– विज्ञान समूह के विद्यार्थियों का व कला समूह विद्यार्थियों की पर्यावरणीय

जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। **अस्थाना, शैलजा एवं द्विवेदी, डी0के0 (2015)**[पग] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– उत्तराखण्ड के देहरादून जिले के बी0एड्0 विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता उच्च स्तर पर पायी गयी। **ढोले, ज्योति (2015)**[ग] ने अध्ययन निष्कर्ष में पाया गया कि– कला विभाग के 80 प्रतिशत विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं वही 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो जल बचाने का प्रयास भी नहीं करते। **वर्मा, मधुलिका (2015)**[गप] ने निष्कर्ष रूप में पाया कि–समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता कार्यक्रम सार्थक रूप से प्रभावी रहा क्योंकि दिये गए उपचारात्मक शिक्षण में चार्टों द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करायी गयी।

श्रीवास्तव, शिवानी (2015)[गपप] ने शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि– शासकीय विद्यालयों के कक्षा 11 के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। **रेड्डी एवं तिवारी (2017)**[गपपप] ने निष्कर्ष में पाया कि– उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **सिंह, प्रमिला (2017)**[गपअ] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– पर्यावरण शिक्षा द्वारा बालक को स्वयं प्राकृतिक तथा जैविक वातावरण की समस्याओं को खोजने में असमर्थ बनाया जाता है, एवं उसका समाधान स्वयं करता है, जिससे जीवन का विकास होता है। शिक्षा के विभिन्न आयामों, विधियों, प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। वास्तविक समस्या के कारण प्रभाव को पहिचानना एवं औपचारिक– अनौपचारिक शिक्षा द्वारा समस्याओं का समाधान करना जिससे मनुष्य में गुणवत्ता लायी जा सके। पर्यावणीय जागरूकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **बलौदा, सुमन (2018)**[गअ] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष– पूर्व अध्ययनों के आधार पर पाया गया कि– माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता समान रूप से पायी गयी तथा कुछ अध्ययनों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में अन्तर भी पाया गया। अतः पूर्व अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति शत्–प्रतिशत जागरूक नहीं है। अतः उन्हें पर्यावरण के प्रति और अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता हेतु सुझाव–

- विद्यार्थियों को धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक परम्पराओं और प्राचीन प्रथाओं/रिवाजों के माध्यम से सही कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाना बहुत आवश्यक है।
- पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से विद्यार्थियों को पेड़–पौधों को संरक्षित एवं सुरक्षित हेतु किये जाने वाले कार्यकलापों हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को वायु, जल भूमि, वाहन तथा ध्वनि प्रदूषण के बारें में शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए तथा उससे होने वाली हानि के बारें में जानकारी देना आवश्यक तथा उसके निस्तारण हेतु उपायों की भी जानकारी देना आवश्यक है।
- साधारण जन–मानस को पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराकर उनसे हो सकने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी जानी चाहिए।

- सरकार द्वारा पर्यावरण प्रदूषण के किये गये प्रावधानों एवं बनाये गये नियमों के बारें में शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति अपने कर्त्तव्यों को जान सके।
- विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मानसिकता बदलने की आवश्यकता है क्योंकि आज भौतिकता एवं अर्थवादी होते जा रहे लोग केवल शिक्षा प्राप्त कर पैसा के पीछे भाग रहे हैं।
- **विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति** नैतिक दायित्व भी जानकारी देना आवश्यक है क्योंकि वे पर्यावरण आचार संहिता के बारें में जागरूक हो सके तथा पर्यावरण के प्रति कठोरता से स्व–पालन कर सके।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति बनाये गये कानूनों एवं नियमों की जानकारी होना आवश्यक है क्योंकि कानूनों एवं प्राविधानों के बारें में जानकारी होने से वह पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम् भूमिका दे पायेंगे।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण क्षरण करने वालों के प्रति कौन से कानून एवं प्रावधान बनाये गये के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- विज्ञान और टेक्नोलॉजी की निरन्तर प्रगति ने पर्यावरण क्षेत्र को कई नई दिशाएं दी है तथा कई समस्याओं को हल करने की पेशकश भी की है जिन्हें इसलिए प्रयोग में नहीं लिया जा सका है क्योंकि वह मँहगी है। अतः विद्यार्थियों को इसमें नयी खोज करने हेतु प्रयोगशाला का निर्माण कराया जाना आवश्यक है।
- स्वच्छ भारत अभियान जो कि सफाई के प्रति देश में जागरूकता फैलाने के लिए चलाया गया है माध्यमिक विद्यार्थियों को इसके प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- विद्यार्थियों को शुद्ध पानी, स्वच्छ भोजन, निरापद वायु, साफ–सुथरा आवास और बिना किसी प्रदूषण के वातावरण एक अच्छे पर्यावरण के आवश्यक घटक के बारें में जागरूक करने की आवश्यकता है और उन्हें यह भी जागरूक करने की आवश्यकता है स्वस्थ्य व्यक्ति ही मानसिक रूप से स्वस्थ होता है और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

[i] महेश कुमार मुछाल (2007). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (न्यूपा), नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 2, पृ0 39–54

[ii] सुभाष सिंह (2008). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध, परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 15, अंक–2, पृ0 84–92

[iii] विश्वकर्मा, उमाशंकर (2009). माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरणीय जागरूकता हेतु संस्थागत प्रयास का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

[iv] दिवाकर, श्वेता (2012). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

[v] रंजना (2013). उच्च स्तर के विद्यार्थियों में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

[vi] गायत्री, ए., रेड्डी, बी. येला व रेड्डी सुधाकर (2014). ए स्टडी ऑफ एनवॉयरमेण्डल अवेयरनेस एमंग सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेण्ट्स इन रिलेक्शन टू कास्ट. फादर ऑकूपेशन, क्लास ऑफ स्टडी इन चित्तूर डिस्ट्रिक्ट. इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च. 3(2).

[vii] जैन, रितेश (2015). इन्वायरमेन्टल अवेरनेस एमंग सीनियर सेकेण्डरी लेवल स्टूडेन्ट्स (महेश्वर एण्ड मण्डलेश्वर, डिस्ट्रिक्ट खरगाँव (म0प्र0). सोशल इश्शू एण्ड इन्वायरमेन्टल प्राब्लम्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च–ग्रन्थालय, पृ0 1–3

[viii] जॉनसन, मालिनी एवं खत्री, अमृता (2015). महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं में पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का स्तर, सोशल इश्शू एण्ड इन्वायरमेन्टल प्राब्लम्स, वाल्यूम–3, इश्शू–9, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च–ग्रन्थालय, पृ0 1–2

[ix] शैलजा, अस्थाना एवं डी0के0 द्विवेदी (2015). ए स्टडी ऑफ इन्वायरमेण्ट्ल अवरनेस एमंग बी0एड0 स्टूडेन्ट्स ऑफ देहरादून डिस्ट्रिक, उत्तराखण्ड, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 3(1), 75–79

[x] ज्योति ढोले (2015). विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता : एक अध्ययन'' (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संदर्भ में), इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, ए नॉलेज रिस्प्रोटरी, सोशल इश्शूस एण्ड एन्वायरमेण्टल प्रॉब्लम्स, 3(9), 1–4

[xi] मधुलिका वर्मा (2015). नवीं कक्षा के विद्यार्थियों का कुक्षी में चल रहे समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता का विकास, सोशल इश्शूस एण्ड एन्वायरमेण्टल प्रॉब्लम्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, ग्रन्थालय, 3(9), 1–3

[xii] शिवानी श्रीवास्तव (2015). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता, सन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 5(1 एवं 2), जून एवं दिसम्बर 2015, पृ0 31–44

[xiii] डिम्पल रेड्डी एवं संजीत कुमार तिवारी (2017). रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 2(2), मार्च 2017, पृ0 23–25

[xiv] प्रमिला सिंह (2017). रीवां विकासखण्ड के हाईस्कूल स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 2(4), 271–274

[xv] सुमन बलौदा (2018). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन, इन्पायर–जर्नल ऑफ मॉर्डन मैनेजमेन्ट एण्ड इण्टरप्रिन्यूशिप, 8(1), 573–576